FAREWELL TO RETIRING MEMBERS

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, ten of our colleagues, from Uttar Pradesh, are retiring today, the 25th of November, 2014, on the completion of their term of office. I am happy to note that some of the retiring Members have been re-elected. But the House will surely miss those who would not be coming back. The retiring Members have made valuable contributions to the proceedings of the House on many memorable occasions. I am sure, they will cherish the memory of their association with this august House. I wish them good health, happiness and success in every sphere of life. The House shall ever remember their association.

If the retiring Members wish to share some impressions with us, they are welcome to do so, as long as the time constraint is kept in mind. It should not exceed three minutes.

श्री ब्रजेश पाठक (उत्तर प्रदेश) : माननीय सभापति महोदय, आपके सान्निध्य में लगातार 6 वर्ष सेवा करने के बाद आज मुझे इस सदन से अवकाश प्राप्त करने का मौका मिला है। मैं सबसे पहले आभार व्यक्त करना चाहूँगा अपनी नेता बहन कुमारी मायावती जी का, बड़े भाई माननीय सतीश चन्द्र मिश्रा जी का और अपने सारे सहयोगियों का, जिनके सहयोग से मैं सदन में लगातार 6 वर्ष जनता की आवाज उठाता रहा। मैं धन्यवाद ज्ञापित करना चाहूँगा सचिवालय के सभी साथियों का, सेक्रेटरी-जनरल साहब का, अपने वाच एंड वार्ड के सभी साथियों का और पत्रकार भाइयों का, जिन्होंने मुझे सेवा करने में समय-समय पर अपनी मदद प्रदान की। माननीय सभापति महोदय, मैं आपसे और माननीय उपसभापति महोदय से क्षमा चाहूँगा कि समय-समय पर जनता की आवाज उठाने के दौरान अगर आपको मेरी वजह से कुछ कष्ट पहुँचा हो, तो मुझे पूरी उम्मीद और भरोसा है कि आप मुझे माफ करेंगे। इस आशा और भरोसे के साथ मैं आज सदन से रिटायर जरूर हो रहा हूँ, लेकिन देश की जनता की आवाज को उठाने के लिए समय-समय पर सदन के बाहर भी, जब भी कोई आवाज देगा, सदन के बाहर मैं लगातार जनहित के मुद्दों पर संघर्ष करता रहूँगा।

मै दो लाइनें कह कर अपनी बात समाप्त करना चाहूँगाः

"सितारों को महफूज़ कर लो आँखों में,
बहुत दूर तक रात होगी,
मुसाफिर हैं हम भी, मुसाफिर हो तुम भी,
फिर किसी मोड़ पर मुलाकात होगी।"

धन्यवाद, जय हिन्द, जय भारत।

श्री अमर सिंह (उत्तर प्रदेश) : माननीय सभापति महोदय, मैं अनवरत 18 वर्ष तक इस सदन में लगातार सांसद रहा हूँ। 1996 से 2009 तक के लिए मैं आदरणीय मुलायम सिंह जी को और

[श्री अमर सिंह]
2009 से 2014 के लिए भाई राम गोपाल यादव जी को ह्रदय से धन्यवाद देता हूँ। मैं अपने मित्र अरुण जेटली जी का भी विशेष आभार व्यक्त करुंगा। मैं उनका आभार व्यक्त इसलिए करूंगा कि आजकल राजनीति बड़ी कटु हो गई है और राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता पारस्परिक वैमनस्य में परिवर्तित हो गई है। लेकिन मुझे याद है, वे यहां बैठते थे और कभी-कभी जब हम उनके लिए बोलते थे, तो उनके पीछे की पंक्ति में बैठे हुए लोग उद्वेलित होते थे, उस समय मुस्कुराकर वे उन्हें इशारा करते थे कि चुप रहो, इन्हें बोलने दो। आलोचना सुनने की सहिष्णुता के लिए मैं उनका ह्रदय से आभारी हूं। मुझे यह भी याद है कि जब मैं जीवन और मृत्यु से संघर्ष कर रहा था, तो मुझे देखने के लिए वे विशेष रूप से सिंगापुर आए थे।

सदन में कभी-कभी मैंने बहुत कटु भी बोला और बहुत स्पष्ट भी बोला। अगर मेरे किसी आचार-विचार से किसी को कष्ट पहुंचा हो, तो उसके लिए मैं क्षमाप्रर्थी हूं। अपने काल में मैंने श्री वेंकटरमण जी को, श्री कृष्णकांत जी को, आदरणीय श्री भैरों सिंह जी को और आपको बहुत नज़दीक से देखा है और सबके सान्निध्य में काम करने का हमें अवसर भी मिला। अब कुछ लोग पूछते हैं कि 18 वर्ष बाद जब आप सदन में नहीं रहेंगे, तो आपको कैसा लगेगा? मैं उनसे कहना चाहूंगाः-

"जिन्दगी एक रात है, जिसमें जाने कितने ख्वाब हैं,
जो मिल गया, वह अपना है, जो टूट गया, वह सपना है।"

दूसरी बात लोग पूछते हैं कि आप बोलेंगे कहां और हम आपको सुनेंगे कैसे? मैं उनसे कहना चाहूंगा-

"मेरी आवाज़ ही पर्दा है मेरे चेहरे का।
मैं हूँ खामोश जहां, मुझको वहां से सुनिए।।"

मैं यहां यह भी बताना चाहूंगा, पिछले दिनों जब अरुण जी रुग्ण थे, तो मैं उनसे मिलने अस्पताल में गया था। वे मूझसे पूछने लगे कि क्या आप फिर से राज्य सभा में आएंगे? मैंने कहा कि अब नहीं आऊँगा। फिर वे बोले कि आप और क्या कहना चाहते हैं? तो मैंने उनसे कहा, अरुण जी, समय, स्वास्थ्य और सम्बन्ध, ये निरन्तर एक से नहीं रहते। कब समय बदल जाए, कब स्वास्थ्य बिगड़ जाए और मधुरतम सम्बन्ध कटुतम सम्बन्ध में परिवर्तित हो जाएं, इसका कोई ठिकाना नहीं है। इसलिए समय, स्वास्थ्य और सम्बन्ध, इन तीनों का ख्याल रखिए। आपने सम्बन्ध और समय का ख्याल तो रखा है, लेकिन स्वास्थ्य का ख्याल नहीं रखा है। हालांकि मैं उपदेश तो दे रहा हूं, लेकिन मैंने भी स्वास्थ्य का ख्याल नहीं रखा है, 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे'। आप अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखिएगा, क्योंकि स्वास्थ्य ठीक रहेगा, तभी समय और सम्बन्ध भी समन्वित रहेंगे। एक बार फिर सभी साथियों को धन्यवाद देते हुए, मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

श्री अवतार सिंह करीमपुरी (उत्तर प्रदेश) : सर, मैं सबसे पहले अपनी पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्षा, बहन कुमारी मायावती जी का खास तौर पर धन्यवाद करना चाहता हूं, जिन्होंने मुझे इस

सदन के ज़रिए देश की जनता से जुड़े हुए मुद्दों पर काम करने का मौका दिया। मैं उनका खास तौर पर इसलिए भी आभारी हूं क्योंकि लोकतंत्र में, जनतंत्र में आजकल धनतंत्र भारी पड़ रहा है, लेकिन आज इस हाउस में खड़े होकर मैं एक बात बताना चाहूंगा। उस वक्त मैं पंजाब बहुजन समाज पार्टी के अध्यक्ष के तौर पर कार्य कर रहा था, जब उन्होंने मुझे लखनऊ में बुलाकर बताया कि मैंने आपको राज्य सभा में भेजने का निर्णय किया है। इससे भी आगे बढ़कर, नॉमिनेशन करते वक्त जो फीस भरी जाती है या जो सेक्योरिटी का पैसा भरा जाता है, वह भी हमसे नहीं भरवाई गई, वह पार्टी के फंड से भरवाई गई। इसके लिए भी मैं अपनी नेता का आभारी हूं।

डॉ. अम्बेडकर साहब का आन्दोलन, महात्मा ज्योतिबा फूले का आन्दोलन, छत्रपति साहू साहब का आन्दोलन और कांशीराम साहब का आन्दोलन, इन आन्दोलनों के जरिए जो सोशल इक्वैलिटी का हक है, सामाजिक बराबरी का हक़ है, वह दिलवाने की कोरिशश की गई। इस देश में हजारों सालों से जो जातिवाद की व्यवस्था फैली हुई है, उसको खत्म करने के लिए इन सभी महात्माओं ने, जिनका मैंने अभी नाम लिया, अपना जीवन लगा दिया। बेशक आज हम इस हाउस से रिटायर हो रहे हैं, लेकिन आज भी सोशल इनइक्वैलिटी को लेकर एक बहुत बड़ा चैलेंज हमारे सामने है। हमें देखने को मिला कि अभी भी इस देश में सामाजिक असमानता है, उसके खिलाफ समाज को एकजुट हो कर बहुत बड़ी जद्दोजहद करने की, जतन करने की जरूरत है।

मैंने छः साल में कोशिश की कि अपनी नेता के आदेशों के मुताबिक अनुशासन में रह कर इस हाउस में अपनी जिम्मेदारी को निभाया जाय, लेकिन फिर भी अगर कहीं मेरे पार्ट से कोई ऐसी कोशिश हुई हो, जिसके कारण चेयरमैन साहब, डिप्टी चेयरमैन साहब या इस हाउस की मर्यादा के ऊपर कोई सवाल खड़ा हुआ हो, तो मैं उसके लिए सबसे, खास कर के चेयरमैन साहब और डिप्टी चेयरमैन साहब से, क्षमा माँगता हूँ।

इस हाउस में आकर इस हाउस के जो हमारे सीनियर सदस्य हैं, जो बहुत ही इंटेलेक्चुअल हैं और जो कंस्ट्रक्टिव डिस्कशन में तथा डिबेट में पार्टिसिपेट करते रहे, उनसे यहां मुझे बहुत कुछ सीखने का मौका मिला। जो कुछ मैंने यहाँ से सीखा, उसको मैंने अपने जीवन में ग्रहण किया और मैं कोशिश करुंगा कि आगे चल कर मैं उसके अकॉर्डिंगली जनता के बीच में सेवा में लगा रहूँ और इस देश की तरक्की और विकास के लिए जो कुछ भी मैं कर सकूँ, खास कर के इस देश का जो डाउनट्रोडन समाज है, अभी भी इस देश का जो वीकर सेक्शन है और जो इकोनॉमिकली वीकर सेक्शन है, उनके उत्थान के लिए जो भी मैं योगदान कर सकूँ, आप सबके आशीर्वाद से वह करुं।

मैं आपका और अपनी पार्टी की नेता बहन कुमारी मायावती जी का शुक्रिया अदा करते हुए सबका धन्यवाद करता हूँ। जय भीम, जय भारत।

श्री मोहम्मद अदीब (उत्तर प्रदेश) : सर, आज से छः साल पहले नवम्बर, 2008 में मैं इस हाउस में जब आया था, तो उस वक्त एक बड़ा तमाशा मुम्बई में हुआ था। एक खबीस कसाब ने

[श्री मोहम्मद अदीब]

हिन्दुस्तान पर आतंकवादी हमला कर दिया था। इस हाउस में और पूरे हिन्दुस्तान में एक चिन्ता फैल गई थी और इस हाउस में इत्तिफाक से सबने यह कहा था कि हमें इस मुल्क को बचाना है। हम सब मिले थे। बड़ी बहसें हुई थीं। लेकिन, मैं हमेशा यह सोचता रह गया कि इस बात पर बहस क्यों नहीं हुई कि जो चंद लोग हिन्दुस्तान में इतना असलहा ले आए कि हमारी फौज को 48 घंटे लड़ना पड़ा, हमने उस पर कभी बहस नहीं की कि ये कौन लोग थे? यह उस वक्त का दौर था। छः सालों के बाद जब मैं जा रहा हूँ, तो मुझे यह लगता है कि इन छः सालों में हिन्दुस्तान में बहुत इन्कलाबी कैफियत पैदा हुई है। अब यहाँ आइडियोलॉजी नहीं रही, यहाँ मार्केटिंग शुरू हो गई। यहाँ गांधी, जिसने अपनी जिन्दगी दिलों को जोड़ने में और दिलों से गंद साफ करने में लगा दी, वह सड़कों पर नीलामी की शक्ल में स्वच्छ भारत पर दिखाया जाने लगा। यह मुल्क ऐसा हो गया, जहाँ यह कहा गया कि हमने नेहरु को कत्ल क्यों नहीं किया और हम खामोश रहे। एक अजीब तमाशा बन गया, पार्टियों का वजूद खतरे में पड़ गया। मैंने सब कुछ इन छःसालों में यहाँ भी और बाहर भी देखा और मैं हैरत में भी हूँ कि मार्केटिंग करके सपने दिखा कर देश को किस सिम्त ले जाया जा रहा है। नवम्बर, 2008 में जब मैं आया था, उस वक्त भी डर लगा था और आज जब रुखसत हो रहा हूँ, तब भी डर लग रहा है। ये वे चीजें हैं, जो इस हाउस में होनी चाहिए थीं। मैं सब जानता हूं।

अरुण जेटली जी पहले इधर बैठते थे। ये एक बेहतरीन ओरेटर हैं। मैंने इनसे बहुत कुछ सीखा। ऐसे लाजवाब मुकर्रिर और ऐसी बातें करते थे कि इन्होंने कभी-कभी गलत बात भी इतने अच्छे तरीके से की कि मेरे दिल के गोशे में यह ख्याल आया कि इस पर यकीन कर लूँ। यह इनकी गुफ्तगू का कमाल है। मैं इनको मुबारकबाद भी देता हूँ। ये वे सीखने के मौके थे, जहां मैंने इनसे सीखा है। अक्सर मेरी और इनकी आइडियोलॉजी और फिक्र में फर्क था, लेकिन क्या एडवोकेसी और क्या इनके बोलने का तरीका था कि दिल के गोशे से आवाज आती थी कि अब इनका यकीन कर लो। यह इनका कमाल है। यह बदनसीबी मेरे साथ रही कि शरद यादव जी, पवार साहब, गुलाम नबी आज़ाद साहब और अन्य सीनियर लोगों की कयादत मुझे बहुत कम दिन हासिल हुई।

मैं समझता हूं कि इस हाउस में बहुत से ऐसे लोग भी हैं, जैसे मणि शंकर अय्यर जी हैं, येचुरी जी हैं, ऐसे कुछ लोग अगर हर पार्टी में हों, तो शायद यहां का निज़ाम कुछ बदल जाए और बेहतर डेमोक्रसी डेवलप हो जाए।

मेरे जैसे बदनसीब लोग जो पीछे बैठते हैं, उनसे हमेशा यह कहा गया कि आगे के लोग एक घंटे में अपनी बात करेंगे, आप दो मिनट में अपनी बात कह लीजिए। मेरे छः साल इसी में गुजर गए कि इतनी लियाकत कहां से लाऊं कि इन दो मिनट में वह बात कह सकूं, जो दिल की तमन्ना है, क्योंकि दो मिनट के बाद आपके यहां उंगलियों में जुम्बिश होती है और घंटी बजने

लगती है। ये छः साल का वक्त गुजर गया। मेरे बहुत से साथी ऐसे हैं, जो यहां आए, उन्होंने कोशिश की कि हम भी यहां कंट्रीब्यूट करें, लेकिन हम लोग वे लोग रहे, जो कोरम पूरा करने वाले लोग थे। हमको न हाउस में बोलने की इजाजत थी, न ये तल्ख़ तजुर्बे इस हाउस में हुए।

मैं उन लोगों को भी याद करुंगा, जो यहां बैठे और जिन्होंने कोरम पूरा करने के सिवाय कभी कोई काम नहीं किया। उनकी भी याद आएगी, जिन्होंने अपनी आवाज़ों से इस वेल को हमेशा जिन्दा किया और वाइब्रेन्ट डेमोक्रसी की पहचान कराई। ये वे सब वाक़यात हैं, जो मेरे साथ हैं। मैं आप सब लोगों का शुक्रिया अदा करता हूँ। चेयरमैन साहब, बिलखुसूस आपका, आपने हमेशा मोहब्बत दी और डिप्टी चेयरमैन साहब, आपने भी हमेशा ख्याल किया। यह अलग बात है कि आपकी उंगली बहुत जल्दी-जल्दी चलती रही, लेकिन आपकी भी मजबूरियां रहीं, लेकिन वे सारे स्टाफ, जो यहां हैं, मैं उन सबका मशकूर और ममनून हूँ। मैं एक शेर के साथ अपनी बात खत्म करता हूंः

"वक्त-ए-रुख्सत जो तूने प्यार से देखा मुझको,
इससे बढ़ कर मेरा सामान-ए-सफर क्या होगा।"

बहुत-बहुत शुक्रिया।

†[**شری محمد ادیب (اترپردیش):** سر، آج سے چھ سال پہلے، نومبر 2008 میں، میں اس ہاؤس میں جب آیا تھا، تو اس وقت ایک بڑا تماشہ ممبئی میں ہوا تھا۔ ایک خبیث قصاب نے ہندستان پر آتنک وادی حملہ کردیا تھا۔ اس ہاؤس میں اور پورے ہندستان میں ایک چنتا پھیل گئی تھی اور اس ہاؤس میں اتفاق سے سب نے یہ کہا تھا کہ ہمیں اس ملک کو بچانا ہے۔ ہم سب ملے تھے، بڑی بحثیں ہوئی تھیں۔ لیکن، میں ہمیشہ یہ سوچتا رہ گیا کہ اس بات پر بحث کیوں نہیں ہوئی کہ جو چند لوگ ہندوستان میں اتنا اسلحہ لے آئے کہ ہماری فوج کو اڑتالیس گھنٹے لڑنا پڑا، ہم نے اس پر کبھی بحث نہیں کی، یہ کون لوگ تھے؟ یہ اس وقت کا دور تھا۔ چھ سالوں کے بعد جب میں جارہا ہوں، تو مجھے یہ لگتا ہے کہ ان چھ سالوں میں ہندوستان میں بہت انقلابی کیفیت پیدا ہوئی ہے۔ اب یہاں آئیڈیالوجی نہیں رہی، یہاں مارکیٹنگ شروع ہوگئی۔ یہاں گاندھی، جس نے اپنی زندگی دلوں کو جوڑنے میں اور دلوں سے گند صاف کرنے میں لگادی، وہ سڑکوں پر نیلامی کی شکل میں سوچھ بھارت پر دکھایا جانے لگا۔ یہ ملک ایسا ہوگیا، جہاں یہ کہا گیا کہ ہم نے نہرو کو قتل کیوں نہیں کیا اور ہم خاموش رہے۔ ایک عجیب تماشہ بن گیا، پارٹیوں کا وجود خطرے میں پڑگیا۔ میں

†Transliteration in Urdu Script.

نے سب کچھ ان چھ سالوں میں یہاں بھی اور باہر بھی دیکھا اور میں حیرت میں بھی ہوں کہ مارکیٹنگ کرکے سپنے دکھا کر دیش کو کس سمت لے جایا جارہا ہے۔ نومبر 2008 میں جب میں یہاں آیا تھا، اس وقت بھی ڈر لگا تھا اور آج جب رخصت ہورہا ہوں، تب بھی ڈر لگ رہا ہے۔ یہ وہ چیزیں ہیں، جو اس ہاؤس میں ہونی چاہئے تھیں۔ میں سب جانتا ہوں۔

ارون جیٹلی جی پہلے ادھر بیٹھتے تھے۔ وہ ایک بہترین اوریٹر ہیں۔ میں نے ان سے بہت کچھ سیکھا ۔ ایسے لاجواب مقرر، ایسی باتیں کرتے ہیں کہ کبھی کبھی انہوں نے غلط بات بھی اتنے اچھے طریقے سے کی کہ میرے دل کے گوشوں میں یہ خیال آیا کہ اس پر یقین کرلوں۔ یہ ان کی گفتگو کا کمال ہے۔ میں ان کو مبارکباد بھی دیتا ہوں۔ یہ وہ سیکھنے کے موقعے تھے، جہاں میں نے ان سے سیکھا ہے۔ اکثر میری اور ان کی آئیڈیالوجی اور فکر میں فرق تھا، لیکن کیا ایڈوکیسی اور کیا ان کے بولنے کا طریقہ تھا کہ دل کے گوشے سے آواز آتی تھی کہ اب ان کا یقین کر لو۔ یہ ان کا کمال ہے۔ میری بدنصیبی میرے ساتھ رہی کہ شرد یادو جی، پوار صاحب، غلام نبی آزاد صاحب اور سینئیر لوگوں کی قیادت مجھے بہت کم دن حاصل ہوئی۔

میں سمجھتا ہوں کہ اس ہاؤس میں بہت سے ایسے لوگ بھی ہیں، جیسے منی شنکر ائیر جی ہیں، ایسے کچھ لوگ اگر ہر پارٹی میں ہو، تو شاید یہاں کا نظام کچھ بدل جائے اور بہتر ڈیموکریسی ڈیولپ ہوجائے۔

میرے جیسے بدنصیب لوگ جو پیچھے بیٹھتے ہیں، ان سے ہمیشہ یہ کہا گیا کہ آگے کے لوگ تو ایک گھنٹے میں اپنی بات کریں گے، آپ دو منٹ میں اپنی بات کہہ لیجئے۔ میرے چھ سال اسی میں گزر گئے کہ اتنی لیاقت کہاں سے لاؤں کہ ان دو منٹ میں وہ بات کہہ سکوں، جو دل کی تمنا ہے، کیوں کہ دو منٹ کے بعد آپ

کے یہاں انگلیوں میں جنبش ہوتی ہے اور گھنٹی بجنے لگتی ہے۔ یہ چھ سال کا وقت گزر گیا۔ میرے بہت سے ساتھی ایسے ہیں، جو یہاں آئے، انہوں نے کوشش کی کہ ہم بھی یہاں کنٹری بیوٹ کریں۔ لیکن ہم لوگ وہ لوگ رہے، جو کورم پورا کرنے والے لوگ تھے۔ ہم کو نہ ہاؤس میں بولنے کی اجازت تھی، نہ یہ تلخ تجربے اس ہاؤس میں ہوئے۔

میں ان لوگوں کو بھی یاد کرونگا، جو یہاں بیٹھے اور جنہوں نے کورم پورا کرنے کے سوا کبھی کوئی کام نہیں کیا۔ ان کی بھی یاد آئے گی، جنہوں نے اپنی آوازوں سے اس ویل کو ہمیشہ زندہ کیا اور وائبرینٹ ڈیموکریسی کی پہچان کرائی۔ یہ وہ سب واقعات ہیں، جو میرے ساتھ ہیں۔ میں آپ سب لوگوں کا شکریہ ادا کرتا ہوں۔ چئیرمین صاحب، بلخصوص آپ کا، آپنے ہمیشہ محبت دی اور ڈپٹی چیئرمین صاحب، آپ نے بھی ہمیشہ خیال کیا۔ یہ الگ بات ہے کہ آپ کی انگلی جلدی جلدی چلتی رہی، لیکن آپ کی بھی مجبوریاں رہیں۔ لیکن وہ سارے اسٹاف، جو یہاں ہیں، میں ان سب کا مشکور اور ممنون ہوں۔ میں ایک شعر کے ساتھ اپنی بات ختم کرتا ہوں ؎

وقت رخصت جو تونے پیار سے دیکھا مجھ کو
اس سے بڑھ کر میرا سامان سفر کیا ہوگا

بہت بہت شکریہ۔

''ختم شد''

श्री सभापति : थैंक यू। राम गोपाल जी, आप तो यहीं रहेंगे।

प्रो. राम गोपाल यादव (उत्तर प्रदेश) **:** महोदय, मुझे कुछ न कुछ तो बोलना है।

माननीय सभापति जी, विदाई का जो वक्त होता है, वह हमेशा दुखद होता है और भारी मन से अपने साथियों को विदा करना होता है। यह मैं बहुत लंबे अरसे से देखता चला आया हूँ और इन अवसरों पर मुझे लगभग हर बार बोलने का अवसर मिला। 1992 में जब मैं पहली बार यहां आया, तो डा. शंकर दयाल शर्मा जी यहां थे, कुछ दिनों के बाद वे राष्ट्रपति हो गए, तब नारायणन साहब आए। उसके बाद बीच में 2004 में मैं लोक सभा में चला गया और कार्यकाल खत्म होने से कुछ पहले फिर तीसरी बार राज्य सभा में आ गया था। इस पूरी अवधि में, 92 से लेकर अब तक चाहे मैं इस हाउस में रहा हूँ, चाहे उस हाउस में रहा हूँ, हर रोज कुछ न कुछ सीखने को मिलता है। हिन्दुस्तान के सवा सौ करोड़ लोगों में से सात-आठ सौ लोग यहां बैठते हैं, इससे ही अंदाज लगाया जा सकता है कि वे कितने महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं। चाहे भले ही बाहर लोग कुछ कहते हों, चाहे प्रेस कुछ कहती हो, लेकिन इस बात का किसी के पास कोई जवाब नहीं हो सकता कि सवा सौ करोड़ में से सात सौ या आठ सौ या साढ़े सात सौ लोग जो हैं, वे निश्चित रूप से इस देश के कुछ विशेष व्यक्ति हैं, जो देश के शासन को चलाने में सहयोग करते हैं, चलाते भी हैं और सहयोग भी करते हैं।

मैंने यहां सिकन्दरबख्त साहब से लेकर इस तरफ लीडर ऑफ द हाउस के रूप में अरुण जेटली साहब को देखा है, इस तरफ बैठे हुए लोगों को उस तरफ और उस तरफ बैठे हुए लोगों को इस तरफ और कई बार बीच में बैठे हुए लोगों को भी इस तरफ बैठे देखा है। अनुभव बहुत है, लेकिन अनुभव कितना ही क्यों न हो, लोगों से बहुत कुछ सीखने को मिलता है। ऐसे बहुत से विद्वान लोग हैं, जिनको अपनी बात कहने का मौका नहीं मिलता, क्योंकि हर पार्टी के सामने समय की पाबंदी होती है। जो जितनी बड़ी पार्टी होती है, उसके सामने समय की और ज्यादा

[प्रो. राम गोपाल यादव]

दिक्कत होती है। उनमें से तीन-चार लोगों को तो बोलने का मौका मिल जाता है, लेकिन उनकी संख्या इतनी ज्यादा होती है कि बहुत से विद्वान साथी बोलने से रह जाते हैं और कई बार जबकि वे बहुत महत्वपूर्ण मुद्दों पर अच्छी और बढ़िया राय दे सकते थे, वे राय नहीं दे पाते हैं।

मैं इस अवसर पर हमारे साथी वीर सिंह जी और राजाराम जी को तो बधाई दूँगा ही जो कि फिर से आ रहे हैं, लेकिन निश्चित रूप से हम श्री अमर सिंह जी, श्री ब्रजेश पाठक जी और श्री करीमपुरी जी को याद करेंगे। यह बात अलग है कि इस सेशन में अस्वस्थता की वजह से अमर सिंह जी कम आए, लेकिन पहले सेशंस में वे बहुत एक्टिव रहे। श्री ब्रजेश पाठक की हुंकार और करीमपुरी जी का लगभग हर मुद्दे पर बोलना, ये हम हमेशा याद रखेंगे। मैं इस अवसर पर उन सबसे यह गुजारिश भी करुंगा कि निराश होने वाली बात नहीं है, यह पॉलिटिक्स है। हमारे यहाँ एक कहावत है कि जो अखाड़े में पड़ा रहता है वह किसी न किसी दिन पहलवान हो जाता है। जो अपनी पार्टी के साथ निष्ठा से जुड़ा रहेगा, कोई जरूरी नहीं कि वह इस सदन से बाहर रहे, पार्टी का नेतृत्व उसको दोबारा लाने की कोशिश करेगा, यह मेरी कामना है। मेरी यह भी कामना है कि जो रिटायर होकर जा रहे हैं, उनका पॉलिटिकल करियर उनके संघर्ष की वजह से बहुत अच्छा बना रहे ओर वे इस सदन में या उस सदन में किसी न किसी रूप में फिर आएँ और जनता की सेवा करते रहें।

चूँकि मैं कल फिर से शपथ लूँगा, इसलिए मैं ज्यादा कुछ नहीं कहना चाहता हूँ, फिर भी मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूँ, क्योंकि आपने हमेशा हम लोगों को सही निर्देश दिए, ठीक मार्गदर्शन किया और आपके मार्गदर्शन में हम लोगों ने कोशिश की कि हाउस जिस तरह से चलना चाहिए, इसे उस तरह से चलाने की कोशिश की जाए। माननीय नेता सदन यहाँ बैठे हुए हैं। कई बार ऐसा होता है कि हाउस डि स्टर्ब हो जाता है, लेकिन उन सबको हम लोग ज्यादा समय तक बैठकर कम्पेन्सेट तो कर ही लेते हैं। पिछली बार की तरह देर रात तक बैठकर हम सारा काम कर लेते हैं। इसलिए उन चीज़ों को एक्सेप्शन के रूप में लिया जाए, क्योंकि हमेशा कोऑपरेशन ही रहा है। मेरी तो हमेशा यही कोशिश रही कि आपकी उंगली घंटी तक पहुँचने के पहले ही मैं अपनी बात खत्म कर लूँ। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री सभापति : वीर सिंह जी, आप कुछ कहना चाहते हैं? आप तो वापस आ रहे हैं, भाई।

श्री वीर सिंह : फिर भी मैं दो शब्द बोल देता हूँ।

श्री सभापति : ठीक है।

श्री वीर सिंह (उत्तर प्रदेश) : माननीय सभापति महोदय, आज मैं सबसे पहले अपनी पार्टी की नेता, आदरणीय बहन कुमारी मायावती जी का शुक्रिया अदा करता हूँ, कोटि-कोटि आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने मेरे जैसे साधारण व्यक्ति को एक बार नहीं, तीन बार राज्य सभा में भेजने का सुअवसर प्रदान किया है। मैं यह कभी सपने में भी नहीं सोच सकता था। मैं जिस वातावरण में पैदा हुआ, जिस जोजखेड़ा गाँव में पैदा हुआ, वहाँ न तो प्राइमरी स्कूल था और न ही रास्ते थे। इसके साथ-साथ, मेरे परिवार में मेरे पिता स्वर्गीय श्री जागन सिंह और मेरी माता जी,

सब अनपढ़ थे। मैं अपने परिवार में सबसे पहला पढ़ा-लिखा व्यक्ति हूँ, इससे पहले मेरे परिवार में सब अनपढ़ थे। किसी भी प्रकार की कोई सुविधा नहीं थी। पढ़-लिखने के बाद 1984 में पहली बार आदरणीया बहन कु. मायावती जी से मेरी मुलाकात हुई और मैंने उनसे सीखा और उनसे शिक्षा ली और जब उनको सुना तो उनसे प्रभावित होकर मैं उनके साथ लग गया। आदरणीय बहन कुमारी मायावती जी ने मुझे अंगुली पकड़कर राजनीति सिखाई और ऐसे व्यक्ति को राज्य सभा में भेजा है। मैं पूरी जिंदगी उनका आभारी रहूंगा। आज मुझे बारह साल राज्य सभा में हो गए। इन बारह सालों में जो आपका सहयोग मिला, सभी सम्मानित सीर्नियस का सहयोग मिला, उसके लिए भी मैं आभारी हूं। समय-समय पर अपने नेता के निर्देशानुसार सदन में हम अपनी बात कहते रहे। आपने हमें समय-समय पर समय दिया और हमें सभी से सीखने का सुअवसर प्रदान हुआ। फिर बहन जी ने मुझे तीसरी बार राज्य सभा में आने का मौका प्रदान किया है। मैं कल शपथ लूंगा। मैं फिर अपनी नेता का और श्रद्धेय मान्यवर कांशीराम जी का जिन्होंने इस देश में हम जैसे गरीब वर्ग के व्यक्तियों को राजनीति में लाने का काम किया, सत्ता और शासन में लाने का काम किया, उनका भी मैं आज आभार व्यक्त करता हूं। मैं ज्यादा न कहते हुए अपनी बात समाप्त कर रहा हूं। जय भीम, जय भारत।

MR. CHAIRMAN: Now, the hon. Leader of the House.

THE LEADER OF THE HOUSE (SHRI ARUN JAITLEY): Mr. Chairman, Sir, ten of our very hon. colleagues retire today after having been Members of this House some for one term, some others for many more terms. Three out of those ten colleagues are coming back and will be re-sworn in tomorrow. I was looking at the strike rate of those who are returning. It is about 30 per cent. We all would have been happier if it was slightly more. But nonetheless, all of them -- we just heard some of them -- have made a great impact in this House. One of the most colourful Members of this House, from whose turn of phrases, we have always benefited, is Shri Amar Singh. आज भी उनका बड़ा खूबसूरत भाषण, वे अपने शब्दों में काफी कुछ कह देते हैं। कुछ ऐसे भी सदस्य थे जिनके विचार कई बार अलग भी होते थे लेकिन वे बहुत खूबसूरती से अपने अलग विचार रख देते थे। अदीब साहब का मैं खास तौर पर जिक्र करुंगा। सहमति-असहमति रहती है लेकिन कई बार जो विषय ये उठाते थे, करीमपुरी जी उठाते थे, अदीब साहब उठाते थे, तो वे अपना प्रभाव हम लोगों की सोच पर भी छोड़ जाते थे। इसलिए हम सब ने उनसे सीखा है, इस सदन की कार्यवाही में उनका बहुत बड़ा योगदान है और मुझे विश्वास है कि इस सदन की जो एक संस्कृति है, the functional culture of this House, all of them are also going out as much better equipped having learned from the decision-making process that this House follows. All these Members are in public life, and I have always said earlier also that those who are in public life never retire. They shift their areas of operation from one forum to another. I am sure they will continue to serve this country and the causes that they represent.

I wish each one of them a very long and healthy life. I hope we will be able to see most of them back in this House, it not immediately, maybe some time in future. I wish them all the best once again.

(MR. DEPUTY CHAIRMAN *in the Chair.*)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, Bill for withdrawal.

श्री नरेश अग्रवाल (उत्तर प्रदेश) : मेरा एक point of order है।

MR. DEPUTY CHAIRMAN : What is this?

श्री नरेश अग्रवाल : उपसभापति जी, राज्य सभा का जो बुलेटिन हम लोगों को मिली है, उस बुलेटिन से हमें ज्ञात हुआ कि चेयरमैन साहब ने नियम 38 के अंतर्गत एक निर्णय लिया है कि प्रश्नकाल का समय 11.00 बजे से हटाकर 12.00 बजे कर दिया जाएगा और 11.00 बजे जीरो ऑवर चलेगा।

श्रीमन, यह उनका अधिकार है और यह नियम 38 में बड़ा स्पष्ट दिया हुआ है। मेरी बातों से ऐसा न समझा जाए कि मैं कोई उनके अधिकारों को चेलेन्ज कर रहा हूं या कहीं अविश्वास प्रकट कर रहा हूँ, लेकिन यह परंपरा रही है कि जब इस तरीके के निर्णय लिए जाते हैं, तो सदन को कॉंफीडेंस में लिया जाता है या दलों के नेताओं से बात होती है। नियम 216 में नियम समिति गठित करने का प्रावधान है। आपने कुछ नियम में बदलाव के लिए प्रस्ताव भी रखा। इसको नियम समिति में भेजा जा सकता है, सभी दलों के नेताओं को बुलाकर चर्चा हो सकती है। हम लोगों के दिल में दर्द यह है कि कहीं चेयरमैन साहब के दिल में यह तो नहीं कि हम लोग हल्ला मचाते हैं, इसलिए इसको बदल दो। आपने अच्छे के लिए सोचा होगा, लेकिन अच्छे के साथ कहीं यह अच्छा न हो जाए।

MR. DEPUTY CHAIRMAN : No, no. It's not that ...*(Interruptions)*...

श्री नरेश अग्रवाल : देखिए, मैं इसलिए कह रहा हूँ, आज हमने यह देखा। श्रीमन्, अगर आप 11.00 बजे जीरो ऑवर कर देंगे, तो हमें तो आपने वैसे ही 11.00 बजे फ्री छोड़ दिया, तो 12.00 बजे तक पूरे फ्री, फिर 12.00 बजे आपका क्वेश्चन ऑवर कैसे चलेगा? ...**(व्यवधान)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Okay. You made your point.

श्री नरेश अग्रवाल : तो मैं यह चाहूंगा कि इस पर पुनर्विचार कर लें और नियम 38 के अनुसार हुए निर्णय पर पुनर्विचार कर लें। ...**(व्यवधान)**... ब्रिटिश पार्लियामेंटरी सिस्टम में पूरे देश में, सब जगह 11.00 बजे क्वेश्चन ऑवर होता है। क्वेश्चन ऑवर को 11.00 बजे रखो।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. Now, you take your seat. ...*(Interruptions)*... The matter is very simple. This was discussed in the Rules Committee and there was informal discussion also. The Report of the Rules Committee was presented by me this morning, and, tomorrow, when it will be moved, you will have the opportunity to speak on it. Then, you can express your view.

श्री नरेश अग्रवाल : सर, आपने यह जो बात कही है, तो कमेटी की रिपोर्ट आज प्रस्तुत हुई है, कल स्वीकार होगी, उसके पहले कैसे नियम बदल गया? अगर कमेटी की रिपोर्ट पर आप

चल रहे हैं, तो कमेटी की रिपोर्ट आज आपने प्रस्तुत की है, फिर यह कल कैसे लागू हो गया? ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN : No, no. That is not the position. ...*(Interruptions)*...

श्री नरेश अग्रवाल : यह तो आप ही कह रहे हैं, मैं नहीं कह रहा हूँ। आपने ही कहा कि मैंने कमेटी की रिपोर्ट प्रस्तुत की, तो कमेटी की रिपोर्ट प्रस्तुत होने के बाद जब तक सदन से स्वीकार न हो जाए, कैसे लागू होगा? हम यह जानना चाहते हैं।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Tomorrow, the Rules Committee Report, which is already presented, will be discussed. The House is supreme. The House can either accept it or reject it. At that time, you can express your view. ...*(Interruptions)*...

SHRI MADHUSUDAN MISTRY (Gujarat): Sir, I would like to know whether the Question Hour. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Tomorrow, we will discuss it. Why do you wish to raise it now?

SHRI MADHUSUDAN MISTRY: Sir, tomorrow, the Question Hour will be taken up at eleven or twelve. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I have presented the Report of the Rules Committee today. It is available to all of you. Kindly read it. It is a decision of the Rules Committee and it is a unanimous decision. The House is supreme; the House can take any decision. Then, why do you worry? ...*(Interruptions)*...

श्री नरेश अग्रवाल : लेकिन कल हाउस की स्वीकृति के बाद यह चेंज होता, तो ज्यादा अच्छा होता, नियम के अनुसार होता। यह तो पहले डिसीजन हो गया और उसके बाद आपकी रिपॉर्ट आए, यह भी बहुत अच्छा नहीं है। इस स्थिति में लागू नहीं होना चाहिए।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Agrawal, because you have raised it, I would like to inform that this was also strictly as per the Rules. Rule 38 is very clear. It gives ...*(Interruptions)*...

श्री नरेश अग्रवाल : डिप्टी चेयरमैन साहब, मैंने कतई यह नहीं कहा, मैंने कहा कि नियम 38 में चेयरमैन साहब को अधिकार है। मैंने कहा कि मेरी बात को अविश्वास नहीं मानना चाहिए, लेकिन यह जो नियम 216 बनाया गया है, जिसमें नियम समिति गठित की गई है। आप देख लीजिए, 216 के बाद 217, 218, 219 तीनों पढ़ लीजिए। उसमें बहुत क्लीअर दिया हुआ है। सदन की सहमति के बाद अगर यह लागू होता, तो शायद ज्यादा अच्छा होता। मुझे पीड़ा हुई, कि कहीं यह तो नहीं समझ लिया है कि हम लोग ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: It is as per the Rules. ...*(Interruptions)*... We are going to take the consent of the House. ...*(Interruptions)*... Naresh ji, we are going to take the consent of the House. Why do you worry? Tomorrow, we will do it.

श्री नरेश अग्रवाल : तो फिर यह लागू कैसे हो गया? जब हाउस से कंसेंट लेना है, तो फिर लागू कैसे हो गया?

श्री उपसभापति : कल हो जाएगा। अगर कंसेंट नहीं है तो नहीं होगा। Then, you should be happy. ...*(Interruptions)*...

श्री नरेश अग्रवाल : इतनी जल्दी क्या थी? दो दिन बाद इसको लागू कर देते।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: We have to go by the procedure. ...*(Interruptions)*... That is all.

SHRI MADHUSUDAN MISTRY: I would like to know whether 'Zero Hour' will be there at 11 o' clock tomorrow. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, it will be at 11 o' clock. Why not? ...*(Interruptions)*... Now, Bill for withdrawal. Shrimati Smriti Zubin Irani.

GOVERNMENT BILLS

The Higher Education and Research Bill, 2011

THE MINISTER OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT (SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI): Sir, I beg to move for leave to withdraw the Higher Education and Research Bill, 2011.

The question was put and the motion was adopted.

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Sir, I withdraw the Bill.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, we shall take up the Labour Laws (Exemption from Furnishing Returns and Maintaining Registers by certain Establishments) Amendment Bill, 2011. ...*(Interruptions)*...

RE. DEMAND FOR HAVING A STRUCTURED DISCUSSION ON BLACK MONEY

SHRI DEREK O'BRIEN (West Bengal): Sir, we raised an issue in the morning on black money. In the morning, in all the din, this issue was not taken up at all. The Government had made some assurances outside the House, inside the House, everywhere,